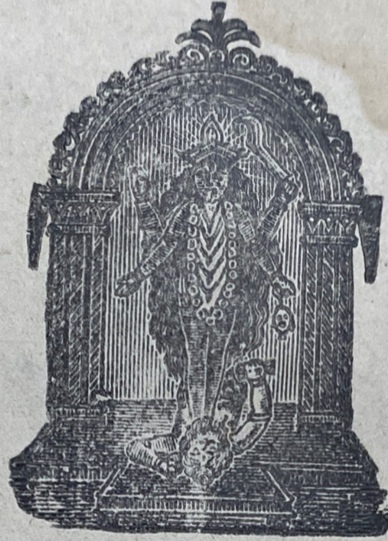
विविध भजनावली



लेखक—

पं० श्री रामजी चौधरी

ग्राम- रुद्रपुर, पोस्ट--अन्धराठाढ़ी,

जिला दरभंगा ।



प्रथम बार १०००	फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा सम्बत् २००४	मूल्य दो आने

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

॥ विनय ॥

जय गणेश शंकर सुत सुन्दर अति कृपालु दीनन जन पालक लम्बोदर अति रूप गजानन, तुम्र यश कहि न सकत सहसानन ।
मैं हूँ अति गमार कछु जानन निज पद कमल देहु उर ध्यानन ॥
रामजी अरज सुनहु कछु कानन । वर्णत चहत राम गुण आनन ॥१॥

॥ राग रेखता ॥

तेरो चरण आश मेरो भवानी, हरहु त्रिविध ताप अवधेश रानी ।
काहे रही बैठ पलको नहीं हेरि, जनके विपति देख मननासिरानी ॥
तेरो चरण धूर चाहत सकल सूर, मेरो रखहु दास शरनोंमेंआनी ।
शेषहु गणेशहु शुरेशहु धरत ध्यान, निश दिन जपत नाम महिमा को जानी ॥
रामजी बुड़न जानि पग तर पड़ी आनी, भव से करहु पार जन जान आनी ॥२॥

॥ लावनी ॥

सुनो दुर्गे भवानी मा, अरज तेरी जनाता हुं।
सभी सुर जाँच कर आयो मनुज को मैं गिनाउं क्या,
किसी से काम न पाये, तेरे ढिग भाग आया हूँ।
हमेसे दीन के बस में कभी पलखत ने पाया हूँ,
फँस गई जाल दुनियां के उवरने नहीं पाता हूँ ॥
तेरे यश को जगत जाने सुरेशो शिर नवाते हैं,
तुहीं महिषा सुरो मारी तेरी गति कौन पाया हूँ।
मेरी एक आश है तेरी कृपा कर ज्यो निवाहोगी
रामजी की यही अरजी तेरो पग धूरि चाहत हूँ ॥३॥

❀ राग झपताला ❀

अम्बे कहूं काहि निज दुःख जाई,
दुस्मन चहूं ओर आये रही घेर
पलपल मारत तीर उर में वेधाई।
कैते करूं सोर तन मन थकत मोर
तेरो भई भोर देवि ना लखाई ॥
रामजी शरण आय पग तजि कहाजाय,
कीजै अभय आय दुर्दिन हटाई ॥४॥

❀ राग ध्रुपद ❀

सेवो मन शंकर अति कृपाल सेवक दुःख भंजन हो दयाल,
जटा शिर शोभित गंग धार तन छाय भस्म उर मुंड माल
लपटित भुजंगम दृग वीशाल बिजया नित पीवत फीरत मतवाल।

कर त्रिशूल वघ छाल बिराजित दास आस राखन के सुर तरू कैलाश वास गिरजा लिये संग बहु बजत ताल शोभै शशिभाल ॥ काशी पति तेरो यश अपार सुनि आये धाय मैं तेरी द्वार रामजी अति दीन कर नेहाल जिमि वेगि मिलै अवधेश लाल ॥५॥

❀ राग संगीत ❀

जय रघुनन्द ये. तेरो यश कहि सकुचि शारद नारदादि न पार पावन निगम आगम कहि के हारत कौन पावत अन्त ब्रह्मादि मुनि सुनि ध्यान रोपत नेतिक हि कहि चरण सेवत वरणि यश निश दिन गावत थकेउ सहस फणीन्द्र भरतादि लषण समेत हनुमत छत्रचामर व्यंजन बहु विध सिंह सन पर सहित भामिनि शोभा कोटि अनंग । प्रभुलाई अमित बिचारि तेरो सकुच लागत कहत मेरो कैसे दरसन पाउं तेरो रामजी मति मन्द ॥६॥

❀ राग संगीत ❀

जय यदुनन्दये ॥

अवतार लय सुर काज करि अम्भोज नयन विशाल शोभित ब्रह्म रुद्र फनिन्द्र सेवित शरुचि शोभा चन्द्र ॥ १ ॥ गोकुला संग ग्वाल खेलत दही माखन लय चुरावत केशि पूतना असुर मारत नथेउ कालि फनिन्द्र ॥२॥ कदम पर नित मुरली टेरत राग संगीत सरस गावत सुनत सुर मुनि नाग मोहत पवन गति भई मन्द ॥३॥ शेष गाय गणेश हारत शारदादि न पार पावत रामजी गुण कैसे जानत कुटिल अति मति मन्द ॥४॥

* राग संगीत *

नाचत स्त्रयंग ये ।।

कुंज बन चहुं ओर सुन्दर सघन बृक्ष बनाय मण्डित लखत सुमन लजाय सुर तरु जग मगात मयंक ।।१।। कठताल डम्फ मंजीर बाजत गोपी गण चहुं दिसि छाजत कुहिकि कलरव मोर नाचत राधा लेत मृदंग ।।२।। बेनु आदि स्वराग बाजत षट त्रिंशरागिन राग गावत देव गण सब सुनत धावत यमुना बढ़त तरंग ।।३।। तिहुं लोक आनंद होत सुनि २ पवन जल सब फिरत पुनि २ रामजी गृह कार्य झाँकत कौतुक रंग ।।४।।

* राग देश *

बिनती मेरो सुनिये हनुमान ।।
तुही एक दीनन के होतवान ।।

बन्धु बिरोध सुग्रीव बिकल भय राम मिलाय कियो दुख त्राण।
जानकी सुधि बिनु राम दुखित भय फानि सिन्धु बुझि आये बलवान ।।
लखन लाल की शक्ति लगे जब करुणा बहुत कीय भगवान
झट से मेरु सजीवन लाये बैद्य बुलाय के राखों प्राण ।
मैं हूँ सतत दीन के बस में निशि दिन जात न जान
रामजी के शरण राखु अब दुखी अशरण जानि ।।

❀ राग गौरी ❀

अब प्रभु आय शरण में तेरी, हम हैं कुटिल कुकर्मक प्यारो तुम कृत पातककि निस्तारो । यह बिचारि अब चूक बिसारो

ज्यों कछु मर्जी होय तिहारो। अब मैं बिमुख फिरकत जैहौं प्रणतपाल है नाम तेहारो। राम कत अधम पुकारे अब जनि नाथ करहु तुम देरो ॥१०॥

*** तिरहुत ***

वारि वयस पहु तेजल सजनी गे कि कहु तनिक विवेक,
कबहु नैन नहि देखल सजनीगे अवधि बितल दुई एक।
भावैन भवन शयन सुख सजनीगे ज्यों मिलत भरि अंक।
एहेन जीवन लय कि करब सजनीगे आनो कहत कलंक।
भूषण वसन भार मम सजनी प्राण रहत अब से शेष।
निर्दय भय पहु वैसल सजनीगे रामजी सहत कत शोक ॥११॥

*** तिरहुत ***

निठुर श्याम नहि बहुरल सजनीगे कैलनि बचन प्रमाण।
कौन विधि दिवस मनायव सजनीगे हित नहीं दोसर आन॥
नयन वरिस तन भीजल सजनीगे दिन २ मदन मलान।
शिर सिन्दूर भावै सजनीगे भूषण भावे न कान॥
केहेन बिधाता निर्दय भेल सजनीगे आनक दुख नहि जान।
रामजी के आश नहि पुरत सजनी मदन कयल निदान ॥१२॥

*** भजन विनय ***

कैसे भजन करौ प्रभु तेरो।

एकतो दुर्दिन सतत रहत हौं दुजै लोभ घनेरो तीजै ऐसे प्रवल काम हैं जिनको बनिरहु चेरो॥ ऐसी हालत में गुजरे दिन तृष्णा से नहीं न्यारों मोह फांस नित रहत हृदय मैं गृह कारज

में प्यारो ॥ कोटि उपाय करि पकरि थाको विषय न तन से भागे, स्वान समान फिरत घर घरही कटील ढीठ मन मेरो ॥ सपनहु सोव खरो सन राखत परो जाय यम वेरो रामजी पर अबहु कृपा करु देहु द्वार निज डेरो ॥१३॥

❀ भजन भैरवी ❀

अब मन ते हरि चरनन अनुराग ।

त्यागि हृदय के विवध वासना दम्भ कपट सब त्याग ॥ सुत बनिता परिजन पुरवासी अन्त न आवे काज । जो पद ध्यान करन सुर नर मुनि तुहुं निशा अब जाग ॥ भज रघुपति कृपाल कोशल पति तारों पतित हजार बिनु हरि भजन बृथा जात दिन सपना सम संसार रामजी सन्त भरोस छारि अब सीता पति लौ लाग ॥१४॥

❀ विनय ❀

विषय तजि नहि कबहुं विश्राम ॥

निसि दिन जात देर नहीं लागत बीते वरष प्रमाण कबहुँ एकान्त शान्त नहीं चित पल भरि नाहीं थीरान । बहुत मनोरथ मन मह राखौं कहि न सकौं कछु काम अब नीयराय बीत गय जीवन देह तजौगे प्राण ताते कहत रामजी तुम को अबहुं भजो सीया राम ॥ सुर दुर्लभ तनु बृथा जात अब फिर न देह एहि ठाम ॥१५

❀ भजन विनय ❀

जगत में नाहक जन्म गमाई ॥

नहि सतसंग विषय बस निशि दिन सुत दारा लौलागि

कबहूँ सीता पति कृपालु के मुखसे नाम न लाई ॥ दान न दीन्हों कबहुँ भूखा को नगन बसन पहिराई । काशी तीरथराज आदि में तन को नाहिं डुबाई ॥ बहुत फिरे बरबाद कियो दिन झूठ के सभा लगाई, नाहिं एकान्त शान्त चित्त होके कबहुँ प्रभु दरशाई ॥ अब क्या तुम पछतावे मुरुख गये समय नहिं पाई । रामजी कोउ नाहिं काहु के संग गये नहिं जाई ॥१६॥

※ भजन बिनय ※

नाहक जीवन बीता मोर ॥ पाये मनुज तन शुभ कर्म कियो नहि अवगुण राख्यो ढेर, हाय हाय दोजक के कारण निशिदिन फिरत अने ॥ तीरथ व्रत पूजा नहिं भावे सतसंगत न करै राम नाम दुर्लभ भव-भेषज कबहूँ नस्वाद करै ॥ सब दिन रहत बेचैन विषय बस स्वारथ रत सगरो पलभर नाहिं शान्त होत चित्त सुखनिधान सुमरे बाल जूवा जरठपन बीतत कबहुँ न तृप्ति भये रामजी अबहुँ हरि चरणन ध्यान कबहुँ करे ॥१७॥

※ भजन बिनय ※

मन तो राम कहत अलसात ॥
सुन्दर देह निरखि मत भूलो पल में जात बिलात धवल धाम वो रंगमहल कीर्ति सब ठमहि रहि जात ॥ सुत दारा परिवार मित्रगण सब स्वारथ के साथ नौकर दरवानी आखिर में नहिं मानत कोउ बात ॥ ताते मोर कहा मन मानो राम भजो दिन रात, रामजी तुम्हे विलम्ब न लागे भवसागर तरि जात ॥१८॥

॥ भजन गजल ॥

अरे नादान समझता ने अखिल चलना जरूरी है।
हर वक्त रहा अफसोस में दिलवर के क्यों विसरता है।
आखीर लाचार होकर के उन्हीं के पास जाना है।
दिगर से दिल लगा करके पिया ले क्यों बिछुरता है।
विराना काम आवे ना समझने से फजूली है।
तेरे समझाउ में निशिदिन बेसमझ नाहिं समझता है।
गुलामी कर श्रीपति को रामजी को निहोरा है ॥१९॥

॥ राग रेखता ॥

खम्भ में मुझे बान्हता तरुआरि लय खय।
जल से मुझे उबारि जग जानता सारे।
बान्हि अग्नि डारि दिन्ह बचाई क्यों मेरे।
गजराज सो थी चाह मुझे भीर ना पड़े॥
इस वक्त तुम कहाँ गये मेरे बूझ ना पड़े।
रामजी कहि जइहें आक सोच ना मेरे।
बदनामी होत जगत में तुम नाम के बड़े ॥२०॥

राग श्यामकल्याण

कान्हा को बतला दे गुजरि आये।
अबहे रास विलास किये हैं पतके ओट छिपाये।
वन वन खोजि न पाये श्याम को कुन्ज वनन अलि आये।
अन्तरध्यान श्याम भए वन में रामजी को ना दरसाये ॥२१॥

ऐजन श्यामकल्याण

ले ले रे आज कोई दधिया ॥

सुनत पुकार धाय मनमोहन बैठो आय दुअरिया ॥
कौन देश तू रहत गुजरिया साँचे साँचे आज कहो हमसे बतिया।
गोकुल में नित बास करत हों तू नहिं जानत हों कन्हैया ॥
रामजी दाम श्याम अब दीजय एकलि जाऊँ दुरि महलिया ॥२२।

(होली)

श्याम हों तुमसे खेलो न होरी ॥
घुमत फिरत तुम अचक आय के पकरि लियो बरजोरी। लय फिचकारि रंग भरि मारत मलत अबीर मुख रोड़ी ॥ एक तो नाजुक उमेरि है मेरो लकझक भइ तुमसे गी। टूटि माल मोतिन के गिर गई कम्मर धरत ममोरी ॥ ऐसी अन्धेरि होत नहिं कतहुँ सब से खेलो तुम होरी। रामजी आजु यसोदा के कहिके पकड़ि बन्धाबहु तोरी ॥२३॥

॥ होली ॥

ब्रज में सब सोचत गोरी आये न पलटि मुरलीधर मोरे। खान पान बिसरे सब मोहन रास बिलासहि छोरि ग्वाल बाल सब तेजे नन्द यसोदा कोरी ॥ कैसे बेपीर होयके बैठे सुरति भुले कैसे जाई सपनहु याद होत नहि उनको यमुना के घट वारि करत हम सब से रारी ॥ सुनत बात अति अचरज लागे त्रिभुवन पति कहलाई तिनके ज्ञान ध्यान सब हरि के कुबजा

रखत लुभाई कहत उनसे यदुराई ॥ फागुन वीते लीखे नहीं पतिया सोच होत दिन रतिया रामजी होरी नाहि खेलो जौन मिले प्रभु आई पिअब बिष माहुर घोरी ॥२४॥

॥ होली ॥

श्याम हो नाहीं खेलोगे होरी तेहारो संग ।
बिगरी जात मेरो सुरुख चून्दरी जौपै डारो रंग ॥
तू मतबाले होकर फिरत ग्वाल बाल के संग घोरि २ ब्रज की यूवती को वोड़ी देत तुम अंग ॥ कर से छीन लेउ पीवकारी बान्हि देउ सब अंग रामजी तबै छूटिहे आदत खेलन गोपी के संग ॥ २५ ॥

॥ कवित ॥

होरी ना खेलो रंग वोरी देत चोली को जरकस जराउ चीर भींगायो है वेसरि की अबरख अवीर वो गुलाब नीर कुमर बरसाबत सिर बार २ चित को घबरायो है बरजत हों अनेक बार रामजी कहों पुकार तुझे मुझे होत रार रिसि को बढ़ायो है ॥२६॥

॥ होली ॥

पिया से मिले कब जाय नैहरवा सुख न सोहाई ।
निसि दिन सोचि रहो निज मन में छन छन खबरि जनाई मोह फांस भारी तन डारो तापर नगर अन्हारी धैरजवा धरो कैसे जाई ॥ बालापन में नेह लगाई प्रौढ़ भई बिसराई जोवन जोर

और भई फागुन दरस विना पछताई ससुरवा देखन ललचाई। कैसे बेपीर पीर नहीं बुझे बैठ अलग हो जाई रामजी बिना दरस ना जैहो करिहो कोटि उपाई गवनमा देवि फिराई ॥२७।

॥ डंफ के होली ॥

बरजोरी होरी मति खेलो लाल मोसे ॥

अलग रहो तुम नियर आओ मत रंग फिचकारी आजू फेकहु न कर से, कोमल गात काहे करत बात मोसे आदंक जीव मेरो जात अधर से ॥ तेरे बिना खेले होरी कैसे जाऊँ घर फिरि रामजी चुमन दे तनिक अधर से ॥२८॥

॥ राग काग़ु काफी ॥

श्यामसुन्दर बिनु होली न भावे मोरि, एक तो विरह बस दुबलि होइ रहु दुजे मदन सुमन सर मारे। पतियो न भेजत मन तरसावत छण क्षण रहत बिरह तनु जारी ॥ निठुर श्याम भये ब्रज को बिसरि गई, रामजी कहत कासे सिरधुनि हारी ॥२९

॥ राग बिहाग ॥

को होत दोसर आन राम बिनु ॥ जो प्रभु जाय तारि अहिल्या जो बनि रहत परवान ॥ जल बिच जाइ गजेन्द्र उबारो सुनत बात एक कान ॥ द्रौपति चीर बढ़ाई सभा बिच जानत सकल जहान ॥ रामजी सीता-पति भज निशिदिन जौ सुख चाहत नादान ॥३०॥

॥ विहाग ॥

श्याम बिनु कैसे बचे मेरो प्राण ॥
सुत पति लाज काज सब तेजि प्रीति कियो भल जानि ना जानूं ऐसो कपटी हैं आखिर होत विरान ॥ चित चोराय जाय के बैठे कैसे करु परमान वंशी बोर दिखाई चह मारे हम सब भीन समान ॥ उनहुँ से हम दोष देत नहिं विधि गति अति बलवान, विषम वियोग सहावत मनमें अबहुं न करत पयान ॥ तुमसे बहुत कहों का ऊधो तुम हो साधु सयान ॥ रामजी की विनती सब कहियो काहे करत निदान ॥३१॥

॥ विहाग ॥

अधम मन तेजु हृदय अज्ञान ॥
सुत दारा देखि रहत मगन मन आखिर होत विरान ॥ बड़े २ योद्धा सब चलि गये पंडित मुनि वलवान । तुमको कौन गिनावत पामर चले सूर्य वो चाँद ॥ अबहुं तुम भजु रघुवर पद निशि दिन राखू ध्यान । पतित उधारन नाम प्रभु के गाबत बेद पुराण ॥ बिनु हरि भजन बृथा दिन बीते राखु बहुत अभिमान । रामजी कहा नाहि मन माने पैहों दुख निदान ॥३२॥

राग रेखता

आशा है मुझे दरश को दिखलाउ वो हरि ॥
सब ठौर खोजि खोजिके पाये नहीं तेरी ॥

चलिहौं न आज शरण से कछु सुनिले मेरी ।
अवगुन के मेरो थाह में जलनिधि से गहिरो ॥
रामजी अरज करत अबहुं ना हेरी ॥३३॥

॥ गजल के ठुमरी ॥

सुरत तेहारो दिल बसे नयनो न देखा है ॥ तुमको न ऐसे चाहिये मुश्किल मुझे देते नेदानी समझ जौं मेरी मिलना कठिन है ॥ तुमसे न छिपी है मेरी सब हाल तों जानै रामजी के बेरि क्यों सुरत छिपाये हैं ॥३४॥

राग रेखता

अधमो की गिनती होत ना दरबार में तेरी ।
सजन सबरी गिद्ध मीरा बाई को तारी ।
सुग्रीव से प्रीत लगाईके तब बालि को मारे ॥
नल वो नल जामवन्त हनुमान को तारे ।
विभीषण को राज दीन्ह रावण मारी ॥
प्रह्लाद विकल जानि हरिण कंस को फारी ।
अधम जात अति निषाद भिलत हौ हरी ॥
निशिदिन बितै बरबादमें हरि नाम से न्यारी
रामजी को कब मिलोगे आश है भारी ॥३५॥

। राग ठुमरी ।

कहाँ छाये बलमुआं हमारी ॥

निशिदिन प्रीति कियो तू पर घर हमसे झूठे करत रारी ॥
दगबाजी तेरी चाल न छूटे हँसि २ बोलत नयन मरी ॥
रामजी अब तेरी सब जानत कबहुं न छारत कमर करी ॥३६॥

राग पावस चौमासा

पावस पास पिया नहि आये कैसे अकेलि रहो घर में ॥ आय अषाढ़ गाढ़ मोहि लागत विरह बान उड़ वेधत रामा, पवन झकोर सोर कर झींगुर दामिन दमकि छतियारी ॥ सावन सरस श्याम नहि आये सुन्दर सेज डर लागत झहरि झहरि वरिसे निसि वासरि अपन पराभव कासे कहो री ॥ भादव भरम रहल मन मोहन अब न आश जीवन के रामा ॥

जल धर जोर अनोर सोर करु मदन बान लिये छेरि ॥ आसीन आस सब त्यागु मिलने के बहुरि श्याम नहि आवत रामा झूठे सोच करु सब सखियन आश त्यागु जब हरि आवन के ॥ ३७

कवित्त

आय अषाढ़ बेड़ घन घोर अनोर करे घन कारि बनाई ।
सुन्दर सेजि न भावे पिया बिनु राति अन्धार बड़े दुखदाई ॥
तापर झींगुर मोर नाचे अब दादुल घोल कलोल मचाई ।
रामजी जाय कहौं उनसे बितिहें बर्षा करिहें का आई ॥ ३८

राग देश

सघन घन आज दामिन नयो ॥
श्याम बिनु दुख होत छन २ देखि जल धर नयो ॥

कुहुकि कलरव सोर दादुल मोर नाचत भयो ॥
पवन देत झकोर चहुदिशि जुगुनु नभ घर छयो ॥
झींगुरन के शब्द सुनि २ नयन नीन्दन गयो ॥
लखि छटा चातक पपीहा रटत रटि दुख दयो,
रामजी कह बिकल राधा कृष्ण बिनु नहि जीयो ॥ ३८

रागदादरा

मेरो साजन गयो विदेश पलटि घर अजहु आये ना ॥
वितल सुखद सिशरि वशन्त नियराये ना ॥
अव तो गृषम आय सतावे प्राण बिकल भयो ना ॥
बोलत कलरव मोर पपीहा मन उरपत हो ना ॥
झींगुर गण दादुल धुनि सुनि २ दाम्नि दमकेउ ना ॥
कैसे बचो रहोगे प्रभु बिनु सुझत उपाये ना ॥
रामजी बुरो विरह सागर में आय डवारो ना ॥ ३९

चैत के ठुमरी

मधपुर वस लों मोहनमा जीवन कोन कामा ॥
टेढ़ी कुबजी मन हरि लीन्ही सोकि हम ब्रज बामा ॥
भूषण बसन जलाय गोकुल के वुर बई यमुनमा ॥
युग सम पलक विते निस बासर रामजी बिकल बिन श्यामा ॥४०

राग चैत

यदुपति विनु नहि भावे मोरी रामा कुञ्ज भवनमा ॥
घर घर सोच करत ब्रज सखी सब आवि गेल बैरन महिनमा ॥
बृन्दाबन पक्षी गण उड़ गेला कते दुख दै गेल मोहनमा ॥
अब नहि पलटि अइहे मन मोहन रामजी कैलो बहनमा ॥ ४१

चैत के ठुमरी

चैत पिया नहि आयेल हो रामा चित घबरायेल ॥
भवनो न भावे मदन सतावे नैन नीन्द नहि लागल ॥
निसिवासर कोइल कित कुहुकत बाग बाग फूल फूलल ॥
रामजी वृथा जात ऋतुराजहि जौंन कन्त भरि मिललरामा ॥
चित घबरायेल चैत पिया नहि आये ॥ ४२

चैत के ठुमरी

आबि गेल चैत बैरनमा हो रामा विधि भेल वामा ॥
लाले २ चून्दरी लगाय पलंग पर पियवा न अयलो सपनमा ॥
जौबन जौर और भई दीन २ विष सन लागत भवनमा ॥
रामजी जीवन वृथा एहि तन में प्रभु कोन देखलो नयनमा ॥

चैत के ठुमरी

आवि गेल सिया के खोजनमा हो रामा पवनसुअनमा ॥
वरजि वरजि हारे सव निसिचर लड़त कोउ न सयनमा ॥
उपवन नास रिसाय लंकपति मेघवा से कहत बयेनमा ॥
मारसि जनि सुत बान्धि के लाऊ रामजी बुझत कारनमा हो रामा ॥ ४४

चैत के ठुमरी

अव नहि भावे भवनमा हो रामा ॥
पिया परदेश गेलो अजहु न आयो छन २ होत बेदनमा हो रामा ॥ आव कि करत प्रीतम मेरो आए वित गेल चैत महिनमा हो रामा ॥ अवधिमिते पतिया नहि भेजे रामजी भेलो बैरनमा हो रामा ॥ ४५

ठुमरी

पिया छाये बिदेशवा हमारी ॥
एक तो दिवस निसि बह पुरबैया दूजे में रात अन्हारी ॥
कौन उपाय करब प्रीतम बिनु अकेलि भवनमा में उमेरिया के थोरो ॥ बड़े-बड़े नैन नीर से भरि गेल रामजी निठुर भये बन्दवारी ॥ ४९

भजन प्रभाती

राम नाम मन भजो सवेरा हरदम कूच नगारा है ॥
सुत बनि तादि सकल परिजन से नाहक नेह लगाता है ॥
अन्त समय कोउ पुछत नाहि निसरि प्राण जब जाता है ॥
बाल समय तन खेलि भुलाबा युबा युवति मन भाया है ॥
वृद्ध भये धन हेतु फिरैं बहु अवहुँ न आशा जाता है ॥
राजा रंक तजि सब चलि गई कोउ रहने नहि आवा है ॥
सो सब समुझि त्रास नहि तेरो निशा घोर में फिरवा है ॥
भटकत फिरत बितेगा जन्महि अन्त समय अब आया है ॥
रामजी अबहु भज रघुपति पद जौ उबरन के आशा है ॥ ५०

भजन प्रभाती

जाग सवेरा ध्यान करो तुम मन में सीता राम को ॥
झूठे भुलि रहो सुत दारा मगन रहो धन धाम को,
अबहु चेत भजु रघुबर पद त्यागु महा अज्ञान को ॥

सुर नर मुनि जाके जस गावे अष्टादस पुराण को ,
शिव सनकादिक नाम जपत नित त्रिभुवन पति भगवान को ॥
निसिवासर पलखत नहि कबहु जग धन्धा बहु कामको,
कबहु चोला छुट जायेंगे पता न लागे प्राण को ॥
अबहुँ आशा त्याग करो मन दुनियाँ है जंजाल को ,
रामजी अबहु गहो हरिचरनन चल जैहों पर धाम को ॥ ५१

महेश बानी

करु हो मन शिव चरनन अनुराग ॥
जो पद काम धेनु फल दायक सो तजि रहत अभाग ॥
मन वाञ्छित सुख देत सबहिको वेद पुराण कह काग ॥
अति दयालु दीनन जन हेरत दियो रंक सिर ताज ॥
शिव सेवा विनु वृथा जात दिन रामजी मूढ़ता त्याग ॥ ५२

महेश बानी

सुनु सुनु चण्डेश्वर नाथ कृपा दृष्ट से एक बेर ताकहु हम छी परम अनाथ ॥ देव दनुज भूपति कत सेबल कियो न दुख के साथ , बड़े निरास आश धय रोपल अहाँक चरण में माथ ॥ भटकि भटकि सब के रुचि बुझल सब स्वारथ के साथ जे छथि मित्र अपोचित परिजन सभै रखै छथि कुत्र थ ॥ नहि किछु वेदपुराण जनै छी नहि पूजा के भाव निसि दिन चिन्ता उदर मेरे को फूसि फटक के बात ॥ अहाँ दयालु दीने

पर सब दिन जनैत अछि संसार रामजी के सकल मनोरथ पूर वहु भोला नाथ ॥ ५३

महेश वानी

बंम भोला छथि अनमोल कतेक दुखी हम जाइत देखल करैत अति अन घोल ॥ ककरहु देविक दैहिक दुख छनि ककरहु भौति कलेस कियो अवै छथि आश अन्न टका के लेल ॥ कतेक बिकल छथि पुत्र दार ले कतेक अनेक कलेस कतेक अहाँ के भजन करै ये परमारथ के लेल ॥ परसि मणि अहाँ भारी वैसल सब के दुख हरि लेल ॥ रामजी किछु कहि न सकैछी अपराधी के लेल ॥ ५४

महेश वानी

एहन बड़ के खोजि आन लन्हि पारवती के लेल ॥
जिनका घर नहि धन परिजन नहि जाति पानिक मेल ,
डमरु बजावथि गिरि पर निसि दिन भूत प्रेत सँ खेल ॥
अन्नक खेती कि छु नहि राखथि भांग धूथुर अलेल ,
भूषण गत्र गत्र में लटकट बिष धर देखि उर मेल ॥
परम बताहक लचण सभ छनि अंग भस्म लेपि लेल ,
हाथी घोड़ा त्यगि पालकी वूढ़ बरद चढ़ि लेल ॥
कहथि रामजी सुनु ए मनाइन भाग ऊदय अब भेल ,
त्रिभुवन पति गौरी पति हेता साजू पूरहर लभे ॥ ५३

महेश वानी

हमरो जीवन व्यर्थ बीति गेल ।
कहियो बिल्बपत्र नहिं तोड़ल, फूल रोपि नहिं भेल ।
अच्छत धूप, दीपलै, चानन शंकर पूजि नहि भेल ॥
कतेक वासना मनमें करि-करि दिवस रैन विति गेल ।
कबहुँ ध्यान शान्त चित्त भै बम-बम कहियो न भेल ॥
सुत बनितादि बिषय बस कबहुँ, मन बिश्राम न भेल ।
चिन्ता करति करति दिन बितल, अब जर्जर तन भेल ॥
कहथि रामजी सकल आश तजि शिव सेबू अलबेल ।
शिव बिनु दोसर के हरत दुसहदुःख निश्चय मन करिलेल ॥ ५४

महेश वानी

शिव कें सुनै छीयन्हि दयाल
दुखि याक कहिया सुनता सवाल ।
जय गंग चन्द्र भाल, कंठ मुण्ड माल, भंग ले बेहाल ॥
वाम भाग पार्वती बसहा सवार, अंग-अंग में विषधर लटकल हजार, भूतनाल प्रणत पाल दिगम्बर धार, भस्म अंग संग बेताल डमरू वघ छाला ॥ रामजी दीनन पर कखन करब खयाल शिव बिना हमर के करत प्रतिपाल ॥ ५५

महेश वानी

शिव काटू ने जंजाल ।
कतेक कहब हम अपन हवाल ॥

निसि दिन चैन नहि भूख भेल काल चिन्ता करति भूलि गेल आँहाक खयाल। बन्धु वर्ग कुटुम्ब संग भेलाह अनेक भल केओ ने सहाय भेला दुर्दिन प्रवल। रामजी के आशा एक जैं निगाहनै करव रहत्र वेकल ॥५६

भजन कीर्त्तन

सारा जोवन वृथा गमायो कवहु न भजल हरी के नाम ॥
चिन्तित रहत सवत सुत दारा पलखत कवहुन देखि धन धाम ॥
अन्त समय कछु हाथ न लागे जव चलिहौं तुम यम के धाम ॥
जहि पद ध्यान धरत सुरनर मुनि वेद पुराण जासु यश गान ॥
सो प्रभु को पद भूलि बिसारो तारो अहिल्या गहि पखान ॥
दौलत दुनिया माल खजाना संग न जैहो सुन नैदान ॥
रामजी सकल भरोस छाड़ि अव गहो चरण सीतापति राम ॥

महेशवानी

शिव कहूने बुझाय ॥
ककरा कहब हम अपन दुख जाय ॥
केओ ने भेटैत छथि आँहक समुदाय जे सुनि हेताह तुरत सहाय ॥ हित मित बनिता सुत स्वारथ से भाए। निर्धन देखि मुख लै छपि घुमाय ॥ वम्मभोला वैद्यनाथ दीनन अपनाय झाड़ी में वैसि हीरालाल को लुटाय ॥ रामजी आशा लगाय कृपा दृष्टि हेरू नाथ लिय अपनाय ॥ ५७

कवित्त

परम हो दयाल नयन तीनि है त्रिशाल गले मुण्ड माल अंग लटकतु है। ब्याल भस्म सुहाल है जटा सुरसरि के धारा चन्द्र सोभतु है। भोला भंग पीके मतवाला कित दीनन को प्रति-पाल है। रामजी अशरण पुकारा एक तुँही हो सहारा जौं पै हेरो एक वारा जो त्रिशूल कर धरा है। ५८

कवित्त

आये जब ऋतु बसंत जीवन के भये अन्त बिलमि रहे निठुर कन्त अजो नहि आयो है। कैसे के घरे धरि घेरि आये मदन वीर पल २ मोहि मरत मारत तीर मन को पीरायो है। कोयल वन करत शोर वृक्षन में सघन जोर फूलन में नाचत मोर ना सुहायो है। कहे कवि रामजी दुनियाँ के एहि रीति जोहि लगाये प्रीति सोही पछतायो है। ५९

कवित्त

रे मन राम के नाम भजु यही जीवन से जँ काम तरी है।
नाहीं तो मूढ़ पड़े तम कूप उबारन को अब कौन बली है।
बाल युवा मति देखि भुलू पल में तन जात ठेकान न पैहों।
जितने सबसे तुम प्यार करो बनितासुत आखिर साथ नजैहों।
रामजी को समझाउ कितै अब अन्त भये दिन थोड़ रही है।६०

कवित्त

प्रियतम तों लगाये नेह जाय बसे दूर देश कैसे को करू उदेश बिरहा तन सताई है। पवन के झकोर जोर बादल के सुनत शोर तन मन सभ थकत मोर शोर ना सुहाये है। झिंगुर के झमक देखि दादुल दमक पेखि बिजुलि के कड़क लेखि जीव को उड़ायो है। रामजी कहे विचारि दर्शन ना देहो मुरारि कैसो के बचे आज आशा फाँस लगी है॥ ६१

कवित्त

मनुष्य तन सुहग पाये सुरपति लजाय हाय हाय करि विताय उदर को वढ़ाये है। निशि दिन में चैन नाहिं साधुन के देखि डेराय दुष्टन को करि बड़ाइ अधर्म ही सुहायो है। कौड़ी-कौड़ी धन बटोरि माल मुलुक लै करोड़ और को दिखायो है। कहै कवि रामजी अवसर में चूकि जात पिछे पछताय हाथ आवत नहि दाव के। ६२

कवित्त

भाइओ भतीजा भगिनी मानि जे से लगाय नेह तात मात दारा सुत दुहिता कह लायो है। पुर जन परिवार आदि पुर वासी समाज पाय हित मित मन्त्री कतनो कर कहलायो है। कहै कवि रामजी ऐ है यम दूत लेन रहिहो सब थक बकाय चलिहो नहिं साथ में। ६३

कवित्त

वंसी मंत बजायो लाल सोर ब्रज भइ बेहाल यूवती डर देत शाल भुले सुधि लाज की। पत्ती पशु आदि जीव जेते सुधि श्रवन विच काहु नहि धरत धीर मुरली सुनि श्याम की। रामजी बृन्दावन पवन जल फिरि गह जड़हु को जड़ तन गई झूकि सूनि तान को। ६४

कवित्त

आये घन कोंर मैं देखि हिया हारे घर प्रितम ने हमारे को सहारे को मुझे प्राण के। कैसे धरों धीर चपला चमकत हौ चहु दीस बरसत है सघन नीर झिंगुर झझकारे है पवन के। झकोर तीर खैचत बल जोर वीर सताये घर मदन वीर निन्द ना सुहाये है। रामजी कत सहत पीर केते दिन सहो पीर आये नहि कान्ह वीर धसिहौ जमुन के नीर बुरिहों विहर धार में। ६५

कवित्त

दिन्हो प्रभु दुर्लभ तनु सुन्दर औ सुरङ्ग अंग पायो धन धाम सुत वारी सुकमारी को। चढ़ते कित तुरङ्ग गजराज के अ-मारी पर बैठे कित ताज दान पालकी। औ जोरी पर जिन्दगी नियराने पर वाना तुम्हे आये मुद अब तो चढ़ो टाटी मरघट

चारि जनो के कान्हे पर। रामजी कबहुँ परमार्थ नहि किन्हो मन आखिर पछताय चले भजलो नही राम नाम। ६६

कवित्त

आये घन कारे में देख हिया हारे घर प्रीतम नहि हमारे को सहारे मुझ प्रान के। कैसे धरो धीर चपला चमकत है चहुँ दिश वरसत है सघन नीर झिंगूर झझकारे है। पवन के झकोर तीर खैंचत बल जोर धीर सताये घर मदन वीर निन्द ना सोहायो है। रामजी कत सहत पीर केते दिन सहो पीर आयो नहि कान्ह वीर धसि हौ यमुना के नीर बहिहौं विरह धार में। ६७

कवित्त

केते मैं पूर्व जन्म कियो है अशुभ कर्म जाके फल पायो नाथ अमित वार एहि तन में। शोक यो वियोग अनेक रोग सताये मुझे त्रिविध ताप तपाये मोहि निश दिन वेचेन में। कहां जाउ का से कहुँ कोउ ना सहारा मूझे वूरत मझधार नाथ अवलम्ब विना नाव के। रामजी दीनन पर अवहुँ प्रभो करू निगाह तुम सम के कृपालु राखें मुझे शरण में। ६८

कवित्त

आये अब चैत चित चेत कर मुरख मन फिरौं क्यों बेहाल जग झूठे जंजाल में। खान पान शयन सुख कबहु नहि होत

तृष्ण भटकत वहु ठौर तुम सारे जहान में। वनिता औ पुत्र परिवारहु सब लागे सनेह जब लगि ज्योति श्वासा है तन में। कहत कवि रामजी अबहुँ भज राम नाम नातो पछतैहैं मूढ़ जैहौं यम खाने में। ६९

कवित्त

पचरंग के महल बीच चहल है गुलाबन की कञ्चन के पलंग पै बिछौना है मखमल की। रेशम की याजीम उप वरन जड़ीदारन की मलमल के तकेया लगायो बिन हार फूलन की हाथी यो घोड़ा ताम दान जोडी सवारी के गिनती नाहि एते सुख पाय काहे विसरत हरिनाम को, कहै कवि रामजी अवहु नहि बुझत मूढ़ आखिर सव तेजि होगे चलना यम धाम को। ७०

कवित्त।

माखन औ मिसरी कचौड़ी नित खाय खाय घेवर औ मलीदा पूरी रावड़ी की स्वाद पायी है, पेड़ा औ जिलेवी वरफी गुलावजाम लड्डू औ बतासा तमासा दिखलायो है। पान औ सुपारी इलायची दाख किस मिस सव नारियल मगाय जय पत्री को खायो हैं। कहै कवि रामजी एते रस चाखि चाखि आखिर पछताय चले चाखे नहि राम रस। ७१

। कवित्त ।

त्यागि अभिमान भगवान क्यों न भजत मूढ़ रहत हौ बेकाम तुम निश दिन बेचैन में। नारी औ सुवन परिवार सब रहत ठाम नौकर औ सिपाह फौज वंते हथियारबन्द हाथी औ घोड़ा पालकी औ तामदान माल औ खजाना तोसखाना सब रहत ठाम कहत हौं रामजी किछुऔ नहिं जात संग चलौगे अकेला स्मशान में जलाने अंग ॥७२॥

। कवित्त ।

मानुष तन दियो भगवान तुम्हें सहज में करत नहिं चैत मूढ़ हरदम अभिमान में। जिन्दगी क्षणभंगु के घमंड तुम राखो ढर सुत वित्त औ नारी अटारी नहिं जात संग भजले मन राम सब काम बनि जाउगे। कहत हौ रामजी अबहुं मन ज्ञान कथ ध्यान कर सीतापति दयालु रामचन्द्र को। ना तो पछतै हैं मन जैहौं जब यम के हाथ मारो गहि कालकण्ड कोउ न बचाओगे ॥७३॥

। कवित्त ।

पाये तुम दुर्लभ तनु सुन्दर औ सुरंग अंग पायो धन धाम सुत नारी सुकमारी को। चढ़े कित तुरंग गजराज की अमारी पर बैठे कित तामदान पालकी औ जोड़ी पर जिन्दगी नियरारे परवाना तुझे आये मूढ़ अब तो चढ़ी टाटी मरघट चारि जनों के कान्हें पर। रामजी दुनिया में कोउ नाहिं आवे काम आखिर पछतावे मन भजलो नहिं राम नाम ॥७४॥

कवित्त

काहे मन भुलि रहौ बिताये हो जीवन का जीगनी दिवाले कभी हैहें एक पल में। नारी औ सुवन सहायक नहिं होत आन मित्र गया परिवार औ कुटुम्ब सब रहत ठाम छूटत जब प्राण कोउ काम नहिं आवेंगे। ताते कहत रामजी पुकारी मन राम नाम काटिहैं कुकर्म तुम जैहौं सुरधाम में ॥७५॥

भजन

जै जै परम कृपालु दिवाकर त्रिभुवन के हितकारी।
पहुँच्यो जबहिं उदयाचल ऊपर तिमिर तरङ्ग बिलाई॥
त्रिविध जीव जग खुशी भये सभ कोक कमल सुखकारी।
सुर नर मुनि सभ प्रातकृत्य करि ध्यान करत प्रभु केरी॥
डोले द्रुमन अनेक उदय देखि भ्रमर गुञ्ज कर भारी।
तुश्र बिनु जगत कोन दुख टारे सन्त सरोज उजियारी॥
दिनमणि दीनबन्धु प्रभु मेरो हरहु असह दुख भारी।
भजत न मूढ़ प्रत्यक्ष देव को निश दिन ध्यान लगाई॥
रामजी तुम्हे बिलम्ब लागे तरिहौं भवनिधि भारी॥७६॥

इति

सिद्धिरस्तु। शुभञ्चास्तु॥

मुद्रक—
श्री बीरबल सिंह
ए० बोस प्रेस मोतीझील,
मुजफ्फरपुर।